

भोपाल वार्तालाप-350, ता. 3.7.07
Disc.CD No.350, dated 3.7.07 at Bhopal

जिज्ञासू – बाबा, अष्टदेव और अष्टरत्न, तो ये नष्टदेव जो हैं वो क्या हैं?
बाबा – स्थापना करने वाली भी आत्माएँ विशेष हैं। तो पालना करने वाली भी आत्माएँ विशेष हैं। तो कठोर कार्य करने वाली भी आत्माएँ विशेष हैं। कोई भी धर्म पिताओं ने पुराने पन को नष्ट नहीं कर पाया। पुरानी दुनियाँ को नष्ट नहीं कर पाया। बाप आकरके वो कार्य करते हैं और कराते हैं। करन करावनहार है। तो जो सूर्यवंशियों के बारह मणके हैं। उनमें चार स्थापनाकारी भी हैं। चार पालना करने वाले भी विशेष हैं और चार नष्ट करने वाले भी विशेष हैं। पालना करने वाले और कन्स्ट्रक्शन करने वाले प्राप्ति करते हैं। और विनाश करने वाले प्राप्ति उतनी नहीं कर पाते।

Student: Baba, there are the eight deities (*ashta dev*) and the eight gems (*ashta ratan*); so who are these deities of destruction (*nashta dev*)?

Baba: There are special souls that cause establishment as well as special souls that cause sustenance. So, there are special souls that perform the tough tasks also. No religious father was able to destroy the oldness (*puranapan*); they were unable to destroy the old world. Having come, the Father performs and enables that task. He is the doer as well as enabler (*karan-karaavanhaar*). So, among the twelve *Suryavanshi* beads four cause establishment. There are also four special souls that cause sustenance as well as four special souls which cause destruction. Those who cause sustenance and construction make attainments. And those who cause destruction are not able to make attainments to that extent.

जिज्ञासू – बाबा, उनकी क्या विशेषता होती है।

बाबा – किनकी नष्टदेवों की? वो आदि से लेकर अंत तक विरोध के लिस्ट में रहते हैं।

जिज्ञासू – बाबा, प्रैक्टिकल में या मन्सा, वाचा, कर्मइन्द्रियों से?

बाबा – मन्सा से भी, वाचा से भी, कर्मइन्द्रियों से भी।

Student: Baba, what is special about them?

Baba: Whom? The deities of destruction (*nashtdevs*)? They remain in the list of opponents from the beginning to the end.

Student: Baba, is it in practical or is it through the mind, speech or bodily organs?

Baba: It is through mind, speech as well as the bodily organs.

समय – 10.17

जिज्ञासू – बाबा, स्वर्ग का अर्थ बताया है। स्व याने आत्मा, गा याने गया। आत्मिक स्थिती में गया; लेकिन फिर ये कहते हैं कि माताओं-कन्याओं द्वारा स्वर्ग के गेट खुलवाता हूँ। गेट याने?

बाबा – स्वर्ग का गेट जो हैं वो वास्तव में पुरुष नहीं खोल सकते; क्योंकि पुरुष प्रकृति जो होती है आतताई होती है। सब दुर्योधन, दुःशासन के लिस्ट वाले हैं। कन्याएँ-माताएँ जो हैं उनको सबको सूर्पणखा, पूतना नहीं कहा है।

Time: 10.17

Student: Baba, the meaning of *swarg* (heaven) has been explained. 'Swa' means 'soul' and 'ga' means 'went'. One went into the soul conscious stage. But then it is said that I get the gates of heaven opened through the mothers and virgins. What does gate mean?

Baba: Actually the gates of heaven cannot be opened by men because the men are tormentors (*aatataayi*) by nature. Everyone comes in the list of Duryodhans and Dushasans. All the virgins and mothers are not called Surpnakha, Pootnaa.

जिज्ञासू – नहीं। गेट का मतलब क्या है, बाबा?

बाबा – गेट का मतलब ये है कि कर्मइन्द्रियों को कन्ट्रोल करना। पुरुष जाति के बस की बात नहीं है। स्त्री जाति अगर चाहे अपन पर आमादा हो जावे तो वो कार्य कर सकती है। इसीलिए बोला तुम भारत माताएँ हो स्वर्ग का गेट खोलने वाली और वो माताएँ हैं बजाए स्वर्ग का गेट खोलने के नर्क का दरवाजा खोल के बैठ जाती हैं। व्यभिचार से होता है नर्क का दरवाजा खोलना और अव्यभिचारी वृत्ति से होता है स्वर्ग का दरवाजा खोलना।

Student: No. Baba, what does 'gate' mean?

Baba: 'Gate' means "to control the bodily organs". It is not possible for the men (to control the organs). If women wish, if they becomes determined, they can perform that task. That is why it has been said – You mothers of India are the ones who open the gates of heaven and those mothers open the gates of hell instead of the gates of heaven. Adultery (*vyabhichaar*) causes the opening of the gateway to hell and unadulterated vibrations cause the opening of the gateway to heaven.

समय – 34.10

जिज्ञासू – बाबा, अंतिम जन्म विशेष महत्व है क्या? क्योंकि रुद्र माला के जो मणके हैं वो स्वभाव-संस्कार से पुरुष प्रवृत्ति के हैं। और मुरली में शिवबाबा बोलते हैं कि कन्याएँ-माताएँ ही स्वर्ग का गेट खोलेंगी। रुद्र माला के जो मणके हैं वो तो चाहे माताएँ-कन्याएँ हो चाहे भाई हो वो तो सब पुरुष प्रवृत्ति के हैं।

बाबा – ठीक है। रुद्रमाला के मणकों में जो कन्याएँ या माताएँ हैं। उनमें ऊँच ते ऊँच पार्ट बजाने वाला मणका कौन है?

Time: 34.10

Student: Baba, is there a special importance of the last birth because the beads of the rosary of Rudra possess the nature and sanskars of men. And Shivbaba says in the Murlis that only the virgins and mothers will open the gateway to heaven. The beads of the rosary of Rudra, whether they are mothers or virgins or brothers, everyone has a masculine attitude.

Baba: It is correct. Which bead among the virgins or mothers of the rosary of Rudra plays the highest on high part?

जिज्ञासू – माताओं में जगदम्बा है।

बाबा – जगदम्बा है माताओं में। तो जब जगदम्बा माताओं में है तो वो पार्ट बजाती हैं ना। कैसा पार्ट बजाती है?

जिज्ञासू – महाकाली।

बाबा – फिर।

जिज्ञासू – मेरे पूछने का मतलब ये था कि जो पुरुष चोले हैं और माताएँ चोले हैं उनके सबके अंतिम जन्म का विशेष महत्व है क्या?

बाबा – बिल्कुल है। अंतिम जन्म का महत्व नहीं है?

जिज्ञासू – जब अंतिम जन्म का महत्व है तो माताएँ और भाई सब रुद्रमाला के मणके हैं। पुरुष स्वभाव-संस्कार वाले हैं।

बाबा – हाँ, ठीक है।

Student: There is Jagdamba among the mothers.

Baba: There is Jagdamba among the mothers. So, when Jagdamba is among the mothers, she plays that part, does she not? What kind of a part does she play?

Student: Mahakali.

Baba: Then?

Student: I meant to ask that - Is there any special importance of the male costumes (i.e. bodies) and the mothers' bodies in the last birth?

Baba: Certainly, there is. Is the last birth not important?

Student: When there is an importance of the last birth, then all the mothers and brothers are the beads of the rosary of Rudra. They have the nature and sanskars of men.

Baba: Yes, it is correct.

जिज्ञासू – पर एक तरफ बाबा बोलते हैं कि कन्याएँ—माताएँ ही स्वर्ग का गेट खोलती हैं।
बाबा – कन्याएँ—माताएँ जो स्वर्ग का गेट खोलती हैं रुद्रमाला का मणका होते हुए भी वो भारत माताएँ कही जाती हैं या जगतमाता कही जाती है?

जिज्ञासू – जगतमाता।

बाबा – जगतमाता कही जाती है। माने सारे जगत में जो भी धर्म के लोग हैं सबके संसर्ग, संपर्क में आती है। सबके संग का रंग लगता है। इसीलिए वो जगतमाताएँ हैं। भारतमाता की कोटि में नहीं आती। तो स्वर्ग का दरवाजा पहले जगतमाताएँ खोलेंगी या भारतमाताएँ खोलेंगी?

जिज्ञासू – भारतमाताएँ।

Student: But on the one side Baba says that only the virgins and mothers will open the gateway to heaven.

Baba: Are the virgins and mothers who open the gateway to heaven, in spite of being the beads of the rosary of Rudra, called the mothers of India (*Bhaarat mataen*) or the world mothers (*Jagat mata*)?

Student: *Jagatmata*.

Baba: They are called *Jagatmata*. It means that they come in connection and contact with the people belonging to all the religions of the entire world. They are coloured by the company of everyone. That is why they are world mothers. They do not come under the category of mothers of India (*Bharat mata*). So, will the world mothers open the gateway to heaven or will the mothers of India open it?

Student: The mothers of India.